इकाई 14 प्रविधि और तकनीक

इकाई की रूपरेखा

14.0 प्रस्तावना

14.1 तथ्य संकलन की विधियां

- 14.1.1 फील्डवर्क
- 14.1.2 सर्वेक्षण
- 14.1.3 दस्तावेज अथवा प्रलेखन
- 14.1.4 प्रायोगिकी

14.2 उपकरण और तकनीक

- 14.2.1 अवलोकन (अवलोकन)
- 14.2.2 साक्षात्कार
- 14.2.3 जीवन इतिहास
- 14.2.4 केस स्टडी
- 14.2.5 वंशावली
- 14.2.6 फोकस समूह चर्चा

14.3 साक्षात्कार अनुसूची और प्रश्नवाली

14.4 सारांश

14.5 संदर्भ

14.6 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

अधिगम का उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरांत विद्यार्थी निम्न बातों की व्याख्या करने में सक्षम होंगेः

- सामाजिक और सांस्कृतिक मानव विज्ञानी द्वारा डेटा संग्रहण के लिए इस्तेमाल की जाने वाली विधियाँ;
- प्रयोग किए जाने वाले उपकरण और तकनीक; और
- साक्षात्कार अनुसूची, साक्षात्कार गाइड और प्रश्नवाली के बीच अंतर

14.0 प्रस्तावना

इससे पूर्व की इकाई में हमने शोध प्रकल्प तैयार करने, शोध विषय का चयन करने, फील्डवर्क करने, फील्ड से तथ्य संकलित करने, डेटा विश्लेषण तथा रिपोर्ट लेखन आदि के बारे में चर्चा

योगदानकर्त्ता : प्रोफेसर, विनय कुमार श्रीवास्तव द्वारा संपादित पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय. वर्तमान निर्देशक, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण.

डॉ. रूखशाना जमान, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली.

की। इस प्रकार संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि पूर्व इकाई में हमने फील्डवर्क करने के विभिन्न चरणों की चर्चा की। मानव विज्ञान के क्षेत्र में लोगों को यह मानना चाहिए कि फील्डवर्क ही एकमात्र विधि नहीं है इसे पूर्ण करने की अन्य विधियाँ भी हैं, जिन्हें अनुसंधानकर्ता इस्तेमाल कर सकता है। इस इकाई में सामाजिक और सांस्कृतिक मानव विज्ञान के क्षेत्र में इस्तेमाल की जाने वाली विभिन्न विधियों के बारे में हम चर्चा करेंगे तथा इस बारे में भी चर्चा करेंगे कि कोई अनुसंधानकर्ता डेटा संग्रहण के लिए किन उपकरणो और तकनीकों का इस्तेमाल करता है ।

14.1 तथ्य संकलन की विधियां

डेटा संग्रहण के चार तरीके हैं। इनमें से प्रत्येक में तकनीकों का एक सेट होता है। इनमें से प्रत्येक तरीके का किसी न किसी शाखा में इस्तेमाल किया जाता है। उदाहरण के लिए इतिहासविद अभिलेखागार, संग्रहालयों और पुस्तकालयों में काम करते हैं और वे वहीं से डेटा(तथ्य) प्राप्त करते हैं। अर्थशास्त्री जनगणना और नमूना सर्वेक्षण से जानकारी प्राप्त करते हैं, जिनमें प्रमुख हैं, नेशनल सैंपल सर्वे, इंडस्ट्रीज का सर्वे इत्यादि। इनमें से प्रत्येक विधि की अपनी वास्तविकता और संबंध की अवधारणा है जो प्रेक्षक और अवलोकन के बीच मौजूद रहती है। यद्यपि इन सभी विधियों को विभिन्न विषयों के अंतर्गत विकसित किया गया है और वे हमेशा जुड़ी रहती हैं। जिसका अर्थ है कि किसी के अवगुणों को दूसरों की खूबियों से दूर किया जा सकता है। डेटा संग्रहण के विभिन्न तरीकों के संयोजन के लिए उपयोग की जाने वाली तकनीकी शब्द का नाम 'ट्राइंगुलेशन' है, जिसकी उत्पत्ति ज्यामिति विज्ञान में हुई। 'ट्राईलुंगेशन' केवल विधि और तकनीक ही नहीं है, यह सैद्धांतिक दृष्टिकोण भी हो सकता है और विभिन्न जांचकर्ताओं से संबंधित भी हो सकता है। यद्यपि शोधकर्ता का उद्देश्य कम समय में पर्याप्त और सही डेटा एकत्रित करना है। प्रत्येक विधि में समय–सीमा संबंधी नियम होते हैं जो कि उचित डेटा संग्रहण के लिए आवश्यक होता है और इसके अनुसार शोधकर्ता को इसी समय–सीमा के अंतर्गत काम करना होता है।

अतः किसी शोधकर्ता को विभिन्न विधियों की जानकारी होनी चाहिए, जो कि सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में उपलब्ध है। वे किस प्रकार शोधकर्ता के लिए सहायक सिद्ध होंगे उसकी भी उसे जानकारी होनी चाहिए। यहाँ यह उल्लेख करना जरूरी है कि आजकल शोधकर्ताओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वे डेटा संग्रहण की प्रक्रियाओं का लेखा–जोखा तैयार रखें और विश्लेषण के जिन तरीकों को वे इस्तेमाल करें उसके बारे में वे वर्णन करें। शोधकर्ता से यह अपेक्षा की जाती है कि शोध के दौरान वे किस समय एक विधि से दूसरी विधि को अपनाते है अथवा उनके द्वारा कौन सी अलग–अलग से विधियों का प्रयोग किया गया है,उसका वर्णन करें। तो आइए इन चार प्रमुख विधियों के बारे में हम चर्चा करें।

14.1.1 फील्डवर्क

तथ्य संकलन की पहली विधि को हम फील्डवर्क कहते हैं। फील्डवर्क प्राकृतिक आवास में स्थिति का प्रत्यक्ष अध्ययन है। फील्डवर्क की एक विशिष्ट परिभाषा यह है कि यह एक प्रकार का इन-सीटू अध्ययन है, जिसका अर्थ किसी घटना का उसके स्वाभाविक स्थान पर अध्ययन है। उदाहरण के लिए अब तक का सबसे वृहत फील्ड अध्ययन जो अभी भी चल रहा है, वह तंजानिया के गोम्बे स्ट्रीम नेशनल पार्क में चिंपांजियों के झुंडों का अध्ययन है, जिसकी शुरुआत जॉने गुडॉल ने 1968 में की थी। यह चिंपांजियों के कैद वाली जगह के स्थान पर उनके

प्राकृतिक आवास का अध्ययन है, जैसे कि इस प्रकार का अध्ययन किसी प्राणी उद्यान या प्रयोगशाला में किया गया हो।

सामान्यतः फील्डवर्क बहुत ही गहन होता है, जिसके अंतर्गत फील्डवर्क करने वाले को समुदाय (या उन लोगों के बीच रहना होता है जिनका वह अध्ययन करता है) में ही जाकर लंबे समय तक रहना होता है और वह भी एक वर्ष से कम नहीं। वर्ष बीतने के बाद फील्ड वर्कर वहां के सामाजिक जीवन को जानने में सक्षम हो जाता है। जिसे पूरे वर्ष समाज द्वारा जीया जाता है जिसमें यह माना जाता है कि वर्ष में जो घटनाएँ घटी हैं वे आने वाले वर्ष में भी होंगी, हालांकि यह भी संभव है कि वर्ष में जो घटनाएँ नहीं घटी हैं वे अगले वर्ष घट सकती हैं, जैसे कि किसी की मृत्यु, कोई प्राकृतिक आपदा या कोई मानव निर्मित आपदा, आदि।

कुछ फील्ड वर्करों (खासकर एडवर्ड इवांस–प्रिचर्ड) यह सलाह देते हैं कि किसी समुदाय में पहले–पहल फील्डवर्क दो साल के लिए होना चाहिए और इसमें भी एक वर्ष के क्षेत्रीयकार्य के उपरांत कुछ महीनों का अंतराल होना चाहिए। कुछ महीनों के लिए फील्ड से अलग रहने की अवधि में फील्ड वर्कर को अपने कार्यों पर ध्यान देने का अवसर मिलता है साथ ही उसे अपने सहयोगियों के साथ चर्चा करने का भी अवसर मिलता है, कि उसने फील्ड में नया क्या सीखा है। नई जानकारियों और समझ के साथ कोई शोधकर्ता पुनः अपने अध्ययन वाले फील्ड में चला जाता है। दूसरे वर्ष में अनुसंधानकर्ता, फील्डवर्क के दौरान प्रथम वर्ष में एकत्र की गई जानकारियों को सत्यापित करने में सक्षम हो जाता है और उन नए प्रश्नों के उत्तर भी ढूँढने लगता है जिसे मुख्य रूप से एकत्रित डेटा से उभरकर और दूसरों के साथ चर्चा के कारण सामने आए हैं। प्रथम वर्ष के फील्ड वर्क को दोहराने से न केवल गलतियों में सुधार होगा और नई समझ विकसित होगी अपितु अवधारणा भी मजबूत होगी। दूसरे वर्ष के फील्डवर्क का कार्य 'अनुभवी अन्वेषक' द्वारा किए जाएंगे।

हालांकि बाद में किया गया क्षेत्रीय अध्ययन कम समय अवधि का भी हो सकता है क्योंकि इस दौरान शोधकर्ता फील्डवर्क की कला को सीख लेगा और वह पहले जैसी गलतियों को नहीं दोहराएगा। साथ ही यह भी सलाह दी जाती है कि शोधकर्ता अपना शोध मसौदा पहले पहल तैयार कर ले अर्थात उसे लिख ले। ताकि अनुसंधानकर्ता समय रहते उसे सुधार सकें।

एक वर्ष के फील्डवर्क (अथवा एक से अधिक वर्षों के फील्ड वर्क) से जो अत्यधिक तथ्य हमें प्राप्त होते है उन्हें समाज अध्ययन के विभिन्न पहलुओं के अंतर्गत प्रकाशित किया जा सकता है। यहां अनुसंधानकर्ता ट्राब्रिएंड आईलैंड पर मालिनोव्स्की के कार्य अथवा न्यूर पर इवांस प्रिचर्ड के कार्य को देख सकते हैं। सामान्यतः फील्डवर्क एक प्रकार से एकल कार्य है। कहने का तात्पर्य यह है कि फील्डवर्क के दौरान फील्डवर्कर स्थानीय निवासियों के साथ अकेले ही फील्ड में होता है। जैसा कि एम.एन श्रीनिवास ने इस बात का वर्णन किया है कि फील्ड वर्कर हर समय लोगों के साथ रहना पसंद नहीं करेगा। वह अपने साथ अपने पति–पत्नी अथवा दोस्तों को नहीं ले जा सकता है इसलिए जो सूचना होती है वह "गुप्त समूह" की सूचना होती है।

14.1.2 सर्वेक्षण विधि

सर्वेक्षण विधि के बारे में यह परिभाषित किया गया है कि इसमें जवाब देने वाला समूह से निश्चित समय के दौरान प्रश्नों के उत्तर पूछे जाते हैं। ज्यादातर सर्वेक्षण बहुत कम समय में पूरे कर लिए जाते हैं हालांकि कुछ एक सर्वेक्षण लंबी अवधि के हो सकते हैं। सर्वेक्षण विधि

या तो एक प्रवृत्ति हो सकती है अथवा पैनल अध्ययन। पैनल अध्ययन और प्रवृत्ति अध्ययन (ट्रेंड स्टडी) में भेद किया गया है। यदि एक ही समूह के उत्तर देने वालों से अलग–अलग समयों में साक्षात्कार किया जाता है ताकि यह पता किया जा सके कि क्या उनके विचारों में कोई बदलाव आया है तब इसे पैनल अध्ययन कहा जाता है। जब किसी समय अलग–अलग लोगों से अलग–अलग समय पर यह देखने के लिए साक्षात्कार किया जाता है कि क्या लोगों का मत अथवा विचार में बदलाव हुआ है तब इसे प्रवृत्ति अध्ययन कहा जाता है। सर्वेक्षण का एक प्रमुख उपकरण अथवा उपस्कर प्रश्नावली है जिसमें प्रश्नों का एक सेट होता है जो किसी विशिष्ट अध्ययन विषय से संबंधित होते हैं। जब प्रश्नावली को ई–मेल अथवा डाक के माध्यम से भेजा जाता है तब इसे ई–मेल प्रश्नावली कहा जाता है परंतु जब इसे आमने–सामने बैठाकर साक्षात्कार की स्थिति में भरा जाता है तब इसे साक्षात्कार अनुसूची कहा जाता है। हम ज्यादातर मामलों में बाद वाले प्रश्नावली को ही चुनते हैं क्योंकि ई–मेल द्वारा भेजी जाने वाली प्रश्नावली का जवाब दर बहुत ही कम होता है और बहुत सारे प्रश्न अनुत्तरित ही रह सकते हैं।

14.1.3 दस्तावेज अथवा प्रलेखन

आलेखों अथवा दस्तावेजों का अध्ययन, तथ्य संकलन की तीसरी विधि है। यह उपलब्ध दस्तावेजों का अध्ययन है। दस्तावेज ना केवल लिखित पांडुलिपि अथवा कथन ही हो सकते हैं। अपितु, दस्तावेज पुरातत्व उपकरण आधार (कलाकृतियां) या शिलालेख (जो कि मंदिरों में पाए जा सकते हैं) या कोई चित्र या कोई अन्य प्रमाण भी हो सकते हैं। दस्तावेज पहले से मौजूद होते हैं और इसलिए वे द्वितीय प्रकार के आंकड़ों को गठित करते हैं। अनुसंधान, दस्तावेजों के विश्लेषण पर केंद्रित होते हैं। दस्तावेज (आलेख) विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं– कार्यालय दस्तावेज भी हो सकते हैं जो संस्थानों के रिकॉर्ड में पाए जा सकते हैं। भारत में ब्रिटिश ाासन की सबसे बड़ी उपलब्धि रिकॉर्ड रूम की स्थापना थी, जिसमें पिछली प्रथाओं से संबंधित रिकार्डों को रखा जा सकता है और उनसे संबंधित अध्ययन किए जा सकते हैं। इन दस्तावेजों को आमतौर पर "आधिकारिक दस्तावेज "कहा जाता है। इसके अतिरिक्त निजी दस्तावेज भी होते हैं। निजी दस्तावेज लोगों के पास होते हैं जिसमें उनकी डायरी, उनके बही–खाता और विभिन्न घटनाओं से संबंधित उनके द्वारा लिए गए विवरण हो सकते हैं। शोधकर्ता इन दोनों प्रकार के दस्तावेजों को अपने अनुसंधान संबंधी विश्लेषण के लिए एकत्रित करते हैं। यही नहीं शोधकर्ता के अनुसार भी दस्तावेज तैयार किए जाते हैं जैसे कि वह अपने सवालों के उत्तर देने वाले लोगों से अनुसंधान उद्देश्यों को पूरा करने के लिए यह कहे कि वे लोग अपने जीवन के बारे में कुछ लिखें अथवा उनके जीवन से संबंधित पहलुओं की कुछ बातें बताएं तो वह भी एक प्रकार का दस्तावेज कहलाएगा।

14.1.4 प्रयोगिक विधि

प्राकृतिक तथा जैविक विज्ञान के क्षेत्र में प्रयोगिक विधि तथ्य संग्रहण का यह मुख्य तरीका है। सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में इस विधि का इस्तेमाल मनोविज्ञान में किया जाता है। कुछ समाजशास्त्री जो छोटे–छोटे समूहों पर काम करते हैं वह प्रयोग भी करते हैं। यहां प्रयोग का अर्थ नियंत्रित स्थिति में प्रयोगशाला में, परिकल्पना के परीक्षण अथवा जांच से है, जहां पर बाहरी चर स्थिति को दिग्भ्रमित नहीं करते हैं। एक आदर्श प्रयोगात्मक डिजाइन दो अलग–अलग समूहों में प्रयोग से संबंधित विषयों के विभाजन को निर्धारित करता है–जो प्रयोगात्मक और नियंत्रित समूह हो सकते हैं। प्रयोगात्मक समूह ,स्वतंत्र चारों से लाभ प्राप्त

कर सकता है जिसके लिए नियंत्रित समूह वंचित होते हैं। तदुपरांत इन दोनों समूहों पर होने वाले प्रभावों की तुलना की जाती है। इस प्रकार प्रायोगिक डिजाइन सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में संभव नहीं है क्योंकि बाहरी चर को मुख्यतः नियंत्रित नहीं किया जा सकता। इसके कुछ नैतिक परिणाम भी होते हैं। इस तरह शास्त्रीय प्रयोगात्मक डिजाइन से विचलन होता है जिसके लिए 'अर्ध प्रयोगात्मक' शब्द का इस्तेमाल किया जाता है।

फील्डवर्क और जांच की दूसरी विधियों का इस्तेमाल करके मानवविज्ञानियों ने जिन समुदायों का अध्ययन किया है उन समुदायों का मानववैज्ञानिक लेखा तैयार करते हैं । यह मानव विज्ञान के शोधार्थियों व मानव वैज्ञानिकों हेतु मुख्य होता है जिसे दूसरे विषयों के विद्वान भी रुचि पूर्वक पढ़ते हैं और लाभान्वित भी होते हैं। अगले अनुभाग में हम इस बात की चर्चा करें कि मानव विज्ञानियों द्वारा डेटा संग्रहण हेतु किन अलग–अलग उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।

अपनी प्रगति की जांच करें

1. तथ्य संकलन की चार विधियों का नाम बताएं।

   .....

   .....

   .....

2. प्रवृत्ति अध्ययन और पैनल अध्ययन में क्या अंतर है।

   .....

   .....

   .....

3. उन कुछ आलेखों का नाम बताएं जिन्हें अध्ययन के लिए दस्तावेज के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

   .....

   .....

   .....

4. प्रयोग किसी नियंत्रित स्थिति में परिकल्पना का परीक्षण है। यह बताएं कि उक्त कथन सही है अथवा गलत।

   .....

   .....

   .....

14.2 उपकरण और तकनीक

आइए, चाय बनाने के उदाहरण के साथ इस अनुभाग को शुरू करते हैं कि उपकरण और तकनीक से क्या तात्पर्य है। एक कप चाय बनाने के लिए हमें सबसे पहले यह निश्चित करना

होगा कि हम किस प्रकार की चाय बनाना चाहते हैं। क्योंकि, बहुत प्रकार से चाय बनती है और चाय बहुत प्रकार की होती है जैसे कि ग्रीन टी, ब्लैक टी, दूध और चीनी वाली चाय अथवा हमारी पसंदीदा मसाला चाय। प्रत्येक चाय बनाने की अलग विधि होती है और तदनुसार उसके लिए इस्तेमाल होने वाले बर्तन भी भिन्न होते हैं, कि चाय किस प्रकार तैयार होगी। अगर हमें ग्रीन टी बनानी हो तो हमें ग्रीन टी की पत्तियों, स्ट्रेनर और बर्तन की जरूरत होगी और वह बर्तन कोई पैन या कुकवेयर हो सकता है जिसका इस्तेमाल चाय बनाने के लिए हॉट प्लेट, गैस अथवा माइक्रोवेव पर किया जा सकता है। साथ ही एक मग और चाय के कप की जरूरत भी होगी जिसमें हम चाय को छान सकते हैं। जब हम किसी तकनीक का उपयोग करके पानी को उबाल लेते हैं (गैस स्टोव अथवा हॉट प्लेट, या इलेक्ट्रिक केतली में अथवा किसी पैन में पानी को उबाल लेते हैं या माइक्रोवेव में पानी को गर्म कर लेते हैं) तब हम उस गर्म पानी को कप या मग में डाल सकते हैं और उसमें ग्रीन टी की पत्तियों को कुछ मिनट के लिए छोड़ सकते हैं और तदुपरान्त हमारी ग्रीन टी बनकर तैयार हो जाएगी। इस प्रकार हम देखते हैं कि विभिन्न तकनीकों जिसे हम चाहे उसका इस्तेमाल करके ग्रीन–टी को बनाया जा सकता है। इसी प्रकार फील्ड में शोधकर्ता को पहले शोध विषय के बारे में निश्चित करना होता है और विषय के आधार पर उससे संबंधित उपकरण और तकनीकों का उसे चयन करना होता है। आमतौर पर तथ्य संकलन के लिए जो मुख्य उपकरण होते हैं वे हैं; (क) अवलोकन (ख) साक्षात्कार (ग) जीवन इतिहास (घ) केस स्टडी और (च) फोकस समूह चर्चा, जिनके अंतर्गत हम विभिन्न तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं जैसे कि अवलोकन तकनीक में प्रतिभागी अवलोकन अथवा गैर–प्रतिभागी अवलोकन, साक्षात्कार के लिए प्रत्यक्ष साक्षात्कार या अप्रत्यक्ष साक्षात्कार।

14.2.1 अवलोकन (प्रेषण)

अवलोकन अथवा प्रेषण किसी विशेष घटना या बात अथवा यहां तक कि दो या दो से अधिक लोगों के बीच के पारस्परिक संबंधों और अंतर–वैयक्तिक संबंधों की जांच के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। हालांकि, इस जांच के लिए यह जरूरी है कि, वह वैज्ञानिक जांच का हिस्सा होने के चलते व्यवस्थित हो और घटना से संबंधित हो। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी समुदाय में जाते हैं और वहाँ के गाँव में स्थित किसी पेड़ का निरीक्षण करते हैं तब उस पेड़ के बारे में वर्णन मात्र गाँव में उसकी अवस्थिति तक ही सीमित नहीं होगी अपितु शोधकर्ता हेतु यह जरूरी होगा कि वह उस पेड़ से जुड़े समुदाय की गतिविधियों से जोड़कर देखे और ऐसी स्थिति में यदि पेड़ का अवलोकन किया जाता है अथवा उसके बारे में कोई रिपोर्ट लिखी या रिकॉर्ड की जाती है तब वह पेड़ वैज्ञानिक जांच का हिस्सा हो जाएगा। अवलोकन को दो भागों में विभाजित किया गया है– (क) प्रतिभागी अवलोकन, (ख) गैर–प्रतिभागी अवलोकन, और (ग) अर्ध–प्रतिभागी अवलोकन। यही नहीं, कुछ विद्वान इसे प्रत्यक्ष प्रतिभागिता और अप्रत्यक्ष प्रतिभागिता के रूप में भी जिक्र करते हैं ।

प्रतिभागी अवलोकनः प्रतिभागी अवलोकन को शुरू करने का श्रेय मालिनोवस्की को जाता है, जिन्होने पापुआ न्यू गिनी के ट्रोब्रिएंड आइलैंडर्स पर आधारित अध्ययन ने मानव विज्ञान के क्षेत्र में फील्डवर्क के लिए मानदंड निर्धारित किए। इस संबंध में मालिनोवस्की ने वर्णन किया कि फील्डवर्क हेतु समुदाय की रोजमर्रा की गतिविधियों में भाग लेना होगा, 'अनुसंधानकर्ता को जहां तक संभव हो व्हॉइट लोगों की संगत से खुद को दूर रखना होगा और यह तभी संभव है जब हम गाँव में शिविर बनाकर रहें"। (मालिनोवस्की, 1922: 6) अवलोकन करने के लिए यह शास्त्रीय तरीकों में से एक तरीका था ताकि अध्ययन के दौरान हम लोगों से जुड़

सकें। शोधकर्ता के लिए भी यह जरूरी होता है कि वह स्थानीय लोगो जैसा ही जीवनयापन करें। हालांकि, इक्कीसवीं सदी में जब फील्ड की परिभाषा में बदलाव हो गया है और फील्ड शोधकर्ता की अपनी भूमि से दूर कोई 'बाहय स्थान' न होकर उसकी अपनी भूमि हो चुकी है ऐसी स्थिति में समुदाय में शिविर लगाना संभव नहीं है। क्योंकि, यदि अध्ययन क्षेत्र कोई संस्था जैसे कि स्कूल, गैर–सरकारी संगठन, कॉरपोरेट स्थल आदि हो तो शिविर लगाना संभव नहीं है। इसके अतिरिक्त मानवविज्ञानी को अपने स्वयं के समुदाय से भी दूर नहीं होना चाहिए क्योंकि शोधकर्ता आजकल अपने समुदायों के बीच रहकर ही कार्य कर रहे हैं ताकि वे समुदाय की अंदरूनी बातों को जान सके। अध्ययन के अंतर्गत समुदाय की गतिविधियों में भाग लेने वाले शोधकर्ता के लिए प्रतिभागी अवलोकन अहमियत रखता है क्योंकि शोधकर्ता यहाँ पर प्रत्यक्ष रूप से समुदाय से या समुदाय की गतिविधियों से जुड़ता है ।

गैर–प्रतिभागी अवलोकनः गैर–प्रतिभागी अवलोकन में शोधकर्ता समुदाय की गतिविधियों में प्रत्यक्ष रूप से शामिल हुए बिना उसका दूर से अध्ययन करता है। यहां पर शोधकर्ता लोगों के जीवन और उनके अनुभवों से अध्ययन के अंतर्गत अपेक्षाकृत दूर होता है। ऐसी स्थिति में शोधकर्ता समुदाय की गतिविधियों का अवलोकन एक बाहरी व्यक्ति के रूप में करता है और वह गतिविधियों को वस्तुनिष्ठ तरीके से देखता है, जबकि यदि प्रेक्षक शारीरिक और भावनात्मक रूप से इसमे शामिल होता है तब अवलोकन व्यक्तिपरक हो जाता है, जहां प्रेक्षक न केवल अवलोकन के आधार पर बल्कि अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर डेटा को रिकॉर्ड करता है।

अर्ध–प्रतिभागी अवलोकनः अधिकांश मामलों में फील्ड में शोधकर्ताओं द्वारा किए गए अवलोकन को अर्ध–प्रतिभागी अवलोकन के रूप में जाना जाता है क्योंकि बहुत से मामलों में पूर्ण प्रतिभागिता संभव नहीं होती है। कई बार शोधकर्ता के लिए यह संभव नहीं होता है कि वह फील्ड की स्थिति से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े। उदाहरण के लिए, किसी समुदाय में लड़के या लड़कियों के *राईट्स डी पैसेज* (दीक्षा संस्कार आदि) का अध्ययन करने के लिए किसी शोधकर्ता को गहन रूप से दीक्षा संस्कार का निरीक्षण करना होगा, हालांकि शोधकर्ता व्यक्तिगत रूप से दीक्षा संस्कार आदि में भाग नहीं ले सकता। अतः भले ही यहाँ प्रतिभागिता है परंतु यह अपने आप में पूर्ण नहीं है इसलिए यह अर्ध–प्रतिभागी अवलोकन होगा।

14.2.2 साक्षात्कार

गुडे एवं हट (1981) का यह कहना है कि 'साक्षात्कार मूल रूप से सामाजिक संपर्क की प्रक्रिया है'। फील्ड में केवल अवलोकन ही पर्याप्त नहीं होता है। अवलोकन को घटनाओं, स्थितियों और गतिविधियों से संबंधित प्रश्नों से जोड़ा जाना चाहिए। साक्षात्कार करने की कई विधियाँ हैं, क्योंकि साक्षात्कार कई प्रकार के होते हैं। साक्षात्कार के मूलभूत तकनीक हैंः (क) प्रत्यक्ष साक्षात्कारय और (ख) अप्रत्यक्ष साक्षात्कार। प्रत्यक्ष साक्षात्कार में शोधकर्ता सूचना प्रदाताओं से मिलता है और आमने–सामने बैठकर उनका साक्षात्कार करता है। जबकि अप्रत्यक्ष साक्षात्कार में शोधकर्ता या तो अपने प्रश्नों को सूचना देने वालों तक ई–मेल के माध्यम से अथवा डाक के माध्यम से या विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भेज सकता है अथवा वेब/दूरभाष के माध्यम से साक्षात्कार ले सकता है। प्रत्यक्ष साक्षात्कार औपचारिक अथवा अनौपचारिक हो सकता है। औपचारिक साक्षात्कार में शोधकर्ता को कुछ प्रोटोकॉल का पालन करना होता है, जिसमें साक्षात्कार किए जाने वाले व्यक्ति से साक्षात्कार का समय लेना, सूचना देने वालों की सहमति लेना तथा साक्षात्कार का समय और स्थान को निश्चित करना। कई

मामलों में साक्षात्कार की अवधि पूर्व–निर्धारित होती है। इस प्रकार के साक्षात्कार में प्रमुख हितधारक जैसे कि सरकारी अधिकारी अथवा क्षेत्र से संबधित प्रसिद्ध व्यक्ति शामिल होते हैं जिन लोगों के लिए समय का बहुत महत्व होता है। हालांकि, किसी गांव में फील्ड यानि अध्ययन क्षेत्र के स्थित होने के कारण ज्यादातर साक्षात्कार अनौपचारिक होते हैं। जब कोई शोधकर्ता लोगों के साथ रहता है तब वह साक्षात्कार समुदाय के लोगों के साथ रहते हुए कर सकता है, और वह भी उनके कुछ सामुदायिक कार्यों में हाथ बंटा सकता है अथवा गांव के किसी टी स्टाल अथवा किसी के घर पर चाय भी पी सकता है जिसे अनेक मानव विज्ञानियों द्वारा 'गहन पैठ करना' (डीप हेंगिंग आउट) कहा जाता है। (फोनटिन 2014: 77) जब शोधकर्ता फील्ड में फील्डवर्क हेतु मौजूद रहता है तब प्रत्यक्ष साक्षात्कार एक आदर्श होता है जो कि औपचारिक या अनौपचारिक हो सकता है। साक्षात्कार करने के लिए प्रतिभागियों की सहमति इसके लिए जरूरी होती है जोकि मौखिक या गैर–मौखिक हो सकता है।

अप्रत्यक्ष साक्षात्कार के मुकाबले प्रत्यक्ष साक्षात्कार के फायदे अधिक होते हैं क्योंकि साक्षात्कार में यह बात अहम नहीं होती है कि क्या कहा गया है अपितु यह बात समान रूप से अहम होती है कि वह बात किस प्रकार से कही गई है। साथ ही आंकड़ों का महत्वपूर्ण पहलू भी इसमें अहम होता है। लोग, कोई बता सकते हैं अथवा उसी बात को एक भिन्न तरीके से कह सकते हैं जिसका तात्पर्य उच्चरित शब्द से भिन्न हो सकता है। प्रत्यक्ष साक्षात्कार में न कि केवल बातों को ही रिकार्ड किया जाता है बल्कि चेहरे के हाव–भाव को भी रिकॉर्ड किया जाता है इसलिए मानव विज्ञानियों हेतु औपचारिक संरचित और प्रतिबंधित साक्षात्कार की तुलना में प्रत्यक्ष साक्षात्कार और असंरचित साक्षात्कार पसंदीदा तकनीक हैं। असंरचित साक्षात्कार में सूचनाओं और विचारों का निर्बाध प्रवाह होता है जिससे आंकड़े अत्यधिक मात्र में प्राप्त होते हैं जोकि साक्षात्कार के संरचित प्रारूपों में संभव नहीं है।

14.2.3 जीवन इतिहास

मानवविज्ञानियों द्वारा जीवन इतिहास का उपयोग किसी व्यक्ति के व्यापक जीवन विवरण को दर्शाने के लिए किया जाता है। यह इतिहास दोनों प्रकार का हो सकता है, चाहे वह व्यक्ति द्वारा लिखा गया इतिहास हो अथवा किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा सुनाया गया इतिहास हो। (लैंगनेस 1965) जीवन इतिहास व्यक्ति के अद्वितीय विशेषताओं को दर्शाता है जो उन्हें समूह में दूसरे लोगों से अलग करता है। (यंग 1996:26) जीवन इतिहास कई बार किसी समूह की विशेषताओं और जीवन पद्धति को भी प्रस्तुत करता है। जिस व्यक्ति के जीवन इतिहास का अध्ययन किया जाना है उसके चयन का मानदंड समुदाय के सदस्य के रूप में उस व्यक्ति के योगदान पर निर्भर करता है। इसके लिए जरूरी नहीं है कि वह एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हो। वह एक सामान्य व्यक्ति भी हो सकता है जिसे आपने प्रमुख सूचना देने वाले के रूप में चुनते हैं और जिसे आपके अध्ययन विषय से संबंधित ज्ञान हो।

प्रतिबिंब

मुख्य सूचनादाता: प्रमुख सूचनादाता कोई भी पुरुष या स्त्री हो सकता है जिसे आपके अध्ययन विषय की जानकारी हो। जो संबंधित विषय से जुड़ी अंदरूनी बातें भी आपको बता सके। सूचना देने वाले प्रमुख व्यक्ति का चयन सामान्यतः शोधकर्ता द्वारा प्रतिष्ठा स्थापन (रेपो निर्माण) के समय ही किया जाता है। जब शोधकर्ता फील्ड में जाकर समुदाय के बारे में जानने समझने की कोशिश करता है उसी समय वह अपने सूचनादाता और वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित कर लेता है।

जीवन इतिहास ,गहन अध्ययन की अनुमति प्रदान करता है। जीवन–इतिहास को एकत्रित करने के पीछे तर्क यह है कि लोग निर्वात (वेक्यूम) में नहीं रहते हैं। लोग समाज में ही रहते हैं और समाज के अनुसार वे इसके मानदंडों और मूल्यों द्वारा निर्देशित होते हैं। इतिहासकार और जीवनीकार जो अद्वितीय अथवा शक्तिशाली व्यक्तियों के इतिहास की तलाश में रहते हैं उसके विपरीत मानवविज्ञानी सामान्य जीवन से सामान्य व्यक्तियों के जीवन इतिहास को एकत्रित करते हैंय ताकि वे अपने अध्ययन की अवधि में आम संस्कृति और जीवन के तरीके के बारे में जान सकें। जीवन इतिहास अक्सर व्यक्ति के जीवन पर सामाजिक और सांस्कृतिक घटनाओं तथा संक्रमण के प्रभाव व बदलाव को दर्शाता है। मानव विज्ञान के क्षेत्र में सबसे प्रसिद्ध जीवन इतिहास पेड्रो मार्टिनेज का है जिसे ऑस्कर लुईस द्वारा लिखा गया है जिन्होंने एक साधारण मैक्सिकन व्यक्ति और उसके परिवार के जीवन के बारे में बहुत विस्तार से वर्णन किया है।

व्यक्तिगत जीवन इतिहास की विधि अमेरिकी सांस्कृतिक मानवविज्ञान में विकसित हुई, क्योंकि यहाँ लुप्त हो रही जनजातियों की संकटपूर्ण स्थिति मौजूद थी। आमतौर पर वे किसी जनजाति के मात्र एक अथवा बहुत कम सदस्यों की जानकारी प्राप्त कर सकते थे। इस प्रकार की स्थिति में किसी एक व्यक्ति के विस्तृत जीवन इतिहास को एकत्रित करना ही एकमात्र तरीका था जिसमें इस लुप्त हो चुकी अथवा हो रही जनजाति के बारे में कुछ जाना जा सके।

14.2.4 केस स्टडी

हर्बर्ट स्पेन्सर पहले समाजशास्त्री थे जिन्होंने अपने मानवविज्ञान संबंधी अध्ययन में केस स्टडी (वैयक्तिक अध्ययन) का उपयोग किया। केस स्टडी (वैयक्तिक अध्ययन) में किसी विशेष घटना, बात या मुद्दे का गहन अनुसंधान शामिल होता है जिसमें किसी समुदाय अथवा लोगों का समूह प्रत्यक्ष रूप से शामिल होता है या उससे प्रभावित होता है। यहाँ हम भोपाल गैस त्रासदी जो 3 दिसंबर 1984 को भोपाल में हुई उसका उदाहरण ले सकते हैं। शारीरिक अथवा जैविक मुद्दों, मनोवैज्ञानिक मुद्दों या औषधीय–कानूनी मुद्दों आदि के संदर्भ में कोई शोधकर्ता त्रासदी से जुड़े प्रभाव का अध्ययन कर सकता है। इस प्रकार के अध्ययन में समूह की एकरूपता का वर्णन त्रासदी के साथ इसके संबंध के संदर्भ में किया जा सकता है कि व्यक्ति कैसे त्रासदी से संबंधित होता है। मानव मस्तिष्क घटनाओं और घटित बातों को याद करने का एक ढंग है जो इसके लिए प्रासंगिक हैं। अतः अलग–अलग लोगों की केस स्टडी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उस घटना से संबधित होती है। परंतु जब केस स्टडी किया जाता है तो वह विभिन्न दृष्टिकोणों या घटनाओं की यादों और समझ के अनुसार ही उसे संदर्भ में जानकारी प्रदान कर सकता है।

केस स्टडी एक प्रकार से समग्र पद्धति है जो हमें किसी घटना या इवेंट से संबंधित सर्वांगीण परिप्रेक्ष्य को अर्जित करने के योग्य बनाती है । कुछ मानवविज्ञानी जैसे कि मैक्स ग्लकमैन और वैन वेलसन ने भी एक पद्धति को विकसित किया जिसे विस्तारित केस स्टडी के रूप में जाना जाता था। इस पद्धति का उपयोग संघर्षों और विवादों और मामलों के विश्लेषण के लिए आमतौर पर प्रयोग किया जाता था। मूल रूप से लंबे समय तक किसी केस या घटना के बाद तक इसे जारी रखा जाता था, जिससे किसी को न केवल संरचनाओं और मानदंडों में एक अंतर्दृष्टि प्राप्त हो सके, अपितु जीवन की सामाजिक प्रक्रियाओं के बारे में भी जानकारी मिल सके ।

14.2.5 वंशावली

अब तक आप वंशावली से परिचित हो चुके होंगे, वंशावली किस प्रकार बनती है इसके बारे में हमने इकाई 6 : 'संस्थानः रिश्तेदारी परिवार और विवाह' में चर्चा की है। वंश की रेखा को जानने में वंशावली सहायता करती है। यह मानवशास्त्रीय फील्डवर्क का एक अभिन्न अंग है क्योंकि, इससे अतीत और वर्तमान को जोड़ कर देखा जा सकता है। वंशावली अध्ययनों ने पूर्वजों और पूर्वजों की पूजा–अर्चना से जुड़े मिथकों और मान्यताओं का पर्दाफाश किया है। उदाहरण के लिए, कार्बी गांव में वंशावली अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि परिवार के कई लोगों के नाम एक समान हैं। वंशावली से पता चलता है कि किसी परिवार में नवजात शिशु का नाम केवल उनके पूर्वजों के नाम पर रखा जा सकता है जिसके लिए चोमनगकान (पूर्वजों की पूजा से संबंधित अनुष्ठान) सम्मिलित किया गया था। चूंकि, चोमनगकान समारोह के लिए अत्यधिक धन और वित्त की जरूरत होती है इसलिए कारबियों ने इस अनुष्ठान को करना लगभग बंद कर दिया है, गाँव में अंतिम चोमनगकान का अध्ययन बीस साल पहले नब्बे के दशक के आखिरी दिनों में हुआ था।

14.2.6 केंद्रीय (फोकस) समूह चर्चा

अब तक हमने शोधकर्ता द्वारा समुदाय में व्यक्तियों के साथ प्रत्यक्ष या आमने–सामने साक्षात्कार के माध्यम से एक दूसरे से बातचीत के बारे में चर्चा की है। समुदाय हितों के संदर्भ में हम केंद्रीय समूह चर्चा द्वारा भी शोध अध्ययन में योगदान कर सकते हैं जिसके अंतर्गत लोगों के समूह साक्षात्कार लिए जाते हैं। एक ही समय में शोधकर्ता एक ही विषय पर एक से अधिक व्यक्ति या कई लोगों की राय लेने के लिए बातचीत कर सकता है जो अनुसंधान के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है। ऐसी स्थिति में फोकस समूह चर्चा की जाती हैं। किसी फोकस समूह चर्चा के दौरान समूह में 8–10 लोग शामिल होते हैं। इसके लिए छोटे समूह प्रबंधनीय होते हैं और इसके द्वारा मध्यस्थ बातचीत जारी रख सकते हैं। यदि समूह बड़ा होता है तो बात करने में असहजता महसूस हो सकती है, जबकि छोटे समूह में वार्तालाप का प्रवाह हावी हो सकता है। किसी केंद्रीय समूह चर्चा में सामान्य रूप से विषम समूह या विभिन्न हितधारकों का चयन किया जाता है ताकि एक ही विषय पर उनके विचार और उनकी राय को समझा जा सके। फोकस समूह चर्चा करने के दौरान शोधकर्ता इसमें भाग नहीं लेता है अपितु वह पूरे सत्र को रिकॉर्ड करता है और उसका अवलोकन करता है।

यह तकनीक, लक्ष्य–उन्मुख और क्रियात्मक–अनुसंधान के लिए अधिक उपयुक्त है, जैसे कि किसी गांव में पोलियो टीकाकरण की शुरूआत या नए कल्याणकारी योजना की शुरूआत करने के लिए लोगों के नजरिए का आकलन करने के उद्देश्य से इस पहलू पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। इसका प्रयोग शायद ही कभी मात्रात्मक अनुसंधान के लिए किया जाता हो।

अपनी प्रगति की जांच करें

5. प्रतिभागी अवलोकन किस मानवविज्ञानी की रचना से जुड़ा हुआ है?

.....

.....

.....

6. मानव विज्ञानियों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के अवलोकन तकनीकों को बताएं ।

.....

.....

.....

7. 'साक्षात्कार बातचीत करने की एक प्रक्रिया है।' यह बताएं कि यह कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

8. 'मानव विज्ञान में जीवन इतिहास के अंतर्गत केवल प्रमुख हस्तियों को शामिल किया जाता है'। यह बताएं कि यह कथन सही है या गलत ।

.....

.....

.....

.....

9. किस समाजशास्त्री ने सबसे पहले अपने फील्डवर्क में केस स्टडी विधि का इस्तेमाल किया?

.....

.....

.....

.....

10. 'फोकस समूह चर्चा में हमें बहुत से लोगों के बड़े समूह की जरूरत होती है।' यह बताएं कि यह कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

14.3 साक्षात्कार अनुसूची और प्रश्नावली

साक्षात्कार लेने के लिए हमें व्यवस्थित दृष्टिकोण को अपनाना होता है। इसके लिए प्रश्न पहले से तैयार कर लिए जाते है ताकि अनुसंधानकर्ता, साक्षात्कार लेने के दौरान सूचनादाता से तर्क–संगत सूचनाओं को प्राप्त कर सके। अनुसंधान कार्य की आवश्यकता के अनुसार विभिन्न प्रकार के साक्षात्कार–अनुसूची और नियम बना लिए जाते हैं। जिसका प्रयोग प्रत्यक्ष

साक्षात्कार के लिए अनुसंधानकर्ता द्वारा या तो संरचनात्मक साक्षात्कार–अनुसूची अथवा गैर–संरचनात्मक साक्षात्कार अनुसूची तैयार करने में करता है।

साक्षात्कार अनुसूची : साक्षात्कार अनुसूची, साक्षात्कार के दौरान शोधकर्ता द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक प्रारूप होता है। संरचनात्मक साक्षात्कार अनुसूची में निश्चित प्रश्नों के प्रारूप होते हैं जिसका प्रयोग अनुसंधानकर्ता साक्षात्कार के दौरान करता है। मुख्यरूप साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग सर्वेक्षण विधि अथवा मात्रात्मक डेटा के संग्रहण हेतु प्रयोग किया जाता है। जनगणना आंकड़ों को सामान्य तौर पर संरचित साक्षात्कार अनुसूची द्वारा एकत्र किया जाता है। ज्यादातर मामलों में इस प्रकार के मात्रात्मक आंकड़ों को संकलित, सारणीबद्ध और विश्लेषित करने की जरूरत होती है।

साक्षात्कार निर्देशिका : गैर–संरचनात्मक साक्षात्कार निर्देशिका का इस्तेमाल साक्षात्कार लेने के लिए उन स्थितियों में किया जाता है जिनमें निश्चित प्रारूपों का इस्तेमाल नहीं होता है। अर्थात, इसे मुख्य रूप से गुणात्मक डेटा के लिए संग्रहण के लिए किया जाता है। साक्षात्कार निर्देशिका, विषय के संबंध में कुछ मूलभूत प्रश्नों की प्रासंगिकता हेतु संरचना प्रदान करने में सहायता करती है, यह उन तथ्यों के बारे में शोधकर्ता को विषयकेंद्रित रखती है जिनके बारे में किसी साक्षात्कार के दौरान पूछताछ की जानी चाहिए। जिसे किसी निर्धारित ढांचे से प्राप्त नहीं किया जा सकता हैं। ये सभी प्रश्न वार्तालाप के प्रवाह को कायम रखने में सहायता करते हैं। विषयांतर अथवा भटकने की स्थिति में साक्षात्कारकर्ता और सूचनादाता को उस विषय पर पुनः बातचीत करने के लिए निर्देशित करते हैं। किसी साक्षात्कार निर्देशिका का इस्तेमाल करके कोई साक्षात्कार उन्मुक्त ढंग से हो सकता है जैसा कि जीवन इतिहास या केस स्टडी संबंधी जानकारी को एकत्रित करने के लिए किया जाता है।

प्रश्नावलीः इस उपकरण का प्रयोग ऐसी स्थिति में किया जाता है जहां शोधकर्ता शारीरिक रूप से उपस्थित न हो सके। इस प्रकार के क्षेत्र में साक्षात्कार हेतु शोधकर्ता प्रश्नावली सूचनादाता तक भेजता है जहां, सूचनादाता इस प्रश्नावली के उत्तरों को भरकर देते हैं। प्रश्नावली का उपयोग वर्चुअल स्पेस में भी किया जा सकता है जैसे कि सर्वेक्षण प्रारूप तैयार करके सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से वेबसाइटों पर ऑनलाइन भेजा जा सकता है जिसे उत्तर देने वाले उसका प्रिंटआउट लिए बिना ऑनलाइन ही उसे भर सकते हैं। साक्षात्कार अनुसूची और प्रश्नावली में मूल अंतर यह है कि साक्षात्कार अनुसूची, साक्षात्कार लेने वाले द्वारा खुद ही क्षेत्र में भरी जाती है, और शोधकर्ता शीट में जानकारी भरता है, जबकि प्रश्नावली के लिए शोधकर्ता को जवाब देने वालों के समक्ष उपस्थित होकर जवाब भरने कि जरूरत नहीं होती। किसी प्रश्नावली के लिए प्रश्नों का क्रम बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसके लिए सरल और स्पष्ट प्रश्नों के साथ प्रश्नावली को शुरू कर सकते है जिसे आसानी से हल किया जा सकता है। तदुपरान्त कठिन और चिंतनशील प्रश्नों के उत्तर पूछे जा सकते हैं। यही नहीं प्रश्नावली के अंतर्गत कोई शोधकर्ता बहुविकल्पीय प्रश्नों को भी पूछ सकता है जिसका उत्तर देने के लिए कई विकल्पों में से एक को चुनना होता है। इसके अतिरिक्त कोई शोधकर्ता टेस्ट प्रश्नों को भी पूछ सकता है। कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तरों की विश्वसनीयता को जानने के लिए अनेक प्रश्नों की रूपरेखा बनानी पड़ सकती है। किसी प्रश्नावली को भरने के लिए समूह का पर्याप्त साक्षर होना जरूरी है जिसे प्रश्नावली का एक अवगुण कहा जा सकता है। जबकि, साक्षात्कार अनुसूची के मामले में ऐसा नहीं होता ।

अपनी प्रगति की जांच करें

11. 'मानवविज्ञानी डेटा संग्रहण के लिए साक्षात्कार अनुसूची और गाइड का इस्तेमाल करते हैं।' यह कथन सही है या गलत, इसका उल्लेख करें।

    .....

    .....

    .....

12. 'मानवविज्ञानी साक्षात्कार लेते समय प्रश्नावली भरते हैं।' यह कथन सही है या गलत, इसका उल्लेख करें।

    .....

    .....

    .....

14.4 सारांश

इस इकाई में हमने शिक्षार्थियों को उन सभी उपकरणों और तकनीकों के बारे में जानकारी दी जिसे शोधकर्ता फील्ड में तथ्य संग्रहण के लिए इस्तेमाल करते हैं। इस इकाई का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों को उनके द्वारा चुने गए शोध विषय के आधार पर फील्ड में सही उपकरण और तकनीकों का चयन करने में सक्षम बनाना है। अब तक शिक्षार्थी इस बात को जान गए होंगे कि मानववैज्ञानिक अनुसंधान के लिए शोधकर्ता फील्डवर्क, सर्वेक्षण, प्रलेखन अथवा प्रयोग जैसी विधियों में से किसी एक विधि अथवा एक से अधिक विधियों का उपयोग कर सकते हैं। यहाँ हमने अवलोकन, साक्षात्कार, जीवन इतिहास, केस स्टडी, वंशावली और फोकस समूह चर्चा के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की है जिनका इस्तेमाल फील्ड में डेटा संग्रहण के लिए किया जाता है।

14.5 सन्दर्भ

फोनटिन, जोस्ट. (2014). '*डूइंग रिसच : फील्डवर्क प्रेक्टिकलिटिज*. डूइंग एंथ्रोपोलॉजिकल रिसर्च , नेटली कोनोपिंसकी द्वारा संपादित, लंदन एवं न्यूयॉर्क : रूटलेज. पेज 70–90.

गोडे, विलियम जे. एवं पॉल के. हेट. (1981). *मेथड्स इन सोशल रिसर्च.* टोक्योः मैकग्रा–हिल इंटरनेशनल बुक कंपनी.

कोठारी, सी. आर. (2009). *रिसर्च मेथोड़ोलोजी.* नई दिल्ली : न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स.

लेंग्नेस, एल. एल. (1965). *द लाइफ हिस्ट्री इन एंथ्रोपोलॉजिकल साइंस,* न्यूयॉर्क : होल्ट, राइनहार्ट एवं विंस्टन.

मालिनोव्स्की, बी. (1922). *अर्गोनोट्स ऑफ द वेस्टर्न पेसिफिक : एन अकाउंट ऑफ नेटिव एंटरप्राइज एंड एड्वेंचर इन द आर्किपेलागोज ऑफ मेलनेसियन न्यू गीनी* : लंदनः रूटलेज एवं केगेन पॉल.

यंग. वी. पॉलिन. (1996). *साइंटिफिक सोशल सर्विस एंड रिसर्च.* दिल्ली : प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया.

14.6 आपकी प्रगति जांचने हेतु उत्तर

1. क. फील्डवर्क ख. सर्वेक्षण ग. प्रलेखन एवं घ. प्रयोग
2. खंड 14.1.2 को देखें
3. खंड 14.1. 3 को देखें
4. सही
5. ब्रोनिस्लाव मालिनोवस्की
6. खंड 14.2.1 को देखें.
7. सही
8. गलत
9. हरबर्ट स्पेंसर
10. गलत
11. सही
12. गलत

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सुझावित अध्ययन

बर्नाड, एलन. (2007). सोशल एंथ्रोपोलॉजी : *इंवेस्टिगेटिंग ह्युमन सोशल लाइफ.*: नई दिल्ली विवा बुक्स प्राइवेट लिमिटेड.

क्लिफर्ड, जेम्स एंड जार्ज. ई. मार्कस. (संपा) (1990). राइटिंग कल्चरः द पोयटिक्स एंड पाल्टिक्स ऑफ इथेनोग्राफी. दिल्लीः आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस.

इरिक्सन, थामस हायलैड. स्माल प्लेसेज, लार्ज इशुजः *एन इंट्रोडक्शन टू सोशल एंड कल्चरल एंथ्रोपोलॉजी* (चतुर्थ संस्करण). 4जी संपा., प्लूटो प्रेस, 2015.

इंगलेक,एम. (2018). *हाउ टू थिंक लाइक एन एंथ्रोपोलाजिस्ट.* प्रिंसटन, आक्सफोर्डः प्रिंसटन विश्वविद्यायल प्रेस.

इवंस–प्रिचर्ड, ई.ई. (1940). *द न्यूर.* आक्सफोर्ड : द क्लेरडान प्रेस.

इवांस–प्रिचर्ड, एडवर्ड इवान और एंड्रे सिंगर.(1981) *ए हिस्ट्री ऑफ एंथ्रोपोलॉजिकल थॉट.* लंदनः बेसिक बुक्स.

फोर्ट्स, मेयर. (1969). *किनशिप एंड सोशल आर्डर.* शिकागोः एल्डिन पब्लिशर्स.

गेर्ट्ज, क्लिफोर्ड (1973). *द इंटरप्रिटेशन ऑफ कल्चर.* न्यूयार्क : बेसिक बुक्स.

गेन्नेप, अर्नोल्ड वैन (1909). *द राइट्स ऑफ पैसेज* (मोनिका बी विएडोम और गैब्रिएला कैफी द्वारा अनु.) लंदनः टलेज और केगन पॉल.

हॉल, एडवर्ड. टी. (1976). *बियांड कल्चर.* गार्डन सिटी, न्यूयार्क : एंकरप्रेस/डब्लडाय, 1976.

हैविलैंड, डब्ल्यू.ए (2003). *एंथ्रोपोलॉजी.* बेलमोंट, सीएः वड्सवर्थ.

इंगोल्ड, टिम. (1986). *इवोलूशन एंड सोशल लाइफ.* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

2018- एंथ्रोपोलॉजीः वाय इट मैटर्स. कैम्ब्रिज, यूकेः पॉलिटी प्रेस.

कपलान, डेविड और रॉबर्ट ए मैनर्स. (1972). *कल्चर थियरी.* इलिनोइसः वेवलैंड प्रेस.

लुईस, आई.एम. (1976). *सोशल एंथ्रोपोलॉजी इन प्रस्पेक्टिवः द रिलेवेंस ऑफ सोशल एंथ्रोपोलॉजी.* हार्ममंडवर्थ : पेंगुइन बुक्स.

मोनाघन, जॉन और पीटर जस्ट. (2000). *सोशल एंड कल्चरल एंथ्रोपोलॉजीः अ वेरी शार्ट इंट्रोडक्शन* - ISBN: 9780192853462

मूर, हेनरीटा और टॉड सैंडर्स. (संपा) (2006). *एंथ्रोपोलॉजी इन थ्योरीः इशूज इन एपिस्टेमोलॉजी.* यूएसएः ब्लैकवेल पब्लिशिंग.

स्टाकिंग, जी. 1974- द शेपिंग ऑफ अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजी, 1883–1911- *अ फ्रैंज बोआस रीडर.* न्यूयार्क : बेसिक बुक्स.